जिया में अंतरराष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर बांटा ज्ञान।

भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, पालमपुर द्वारा जिया पंचायत के एक वार्ड में अंतरराष्ट्रीय दुग्ध दिवस के उपलक्ष्य पर किसान गोष्ठी/पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। डा. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय दुग्ध दिवस के बारे में बताते हुए कहा कि दूध हर किसी के जीवन का ऐसा हिस्सा है जिसके बिना पोषण अधूरा लगता है। यही वजह है कि दुनिया भर में दूध और डेयरी उत्पादों के महत्व पर जोर देने के लिए अंतरराष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया जाता है। यह दिन दूध पीने की आदत को बढ़ावा देने तक सीमित नहीं है बल्कि लाखों डेयरी किसानों और पशुपालकों के योगदान को सम्मान देता है जो इस उद्योग की रीढ है, अंतर्राष्ट्रीय दुग्ध दिवस लोगों को यह समझाने का अवसर भी देता है कि दूध केवल एक पेय पदार्थ नहीं बल्कि स्वास्थ्य पोषण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़ा एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह दिन दुनिया के अनेक देशों में उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष इसकी थीम सेलिब्रेटिंग वूमेन फार्मर्स रखी गई है जिसमें महिला किसान महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार यह थीम परिश्रम, नेतृत्व और खाद्य सुरक्षा में योगदान को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास है। डॉ गोरख मल प्रमुख ने कहा कि दूध कैल्शियम प्रोटीन विटामिन डी फास्फोरस और कई आवश्यक पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत माना जाता है। यह हड्डियों को मजबूत बनाने मांसपेशियों के विकास और शरीर की उर्जा बनाए रखने में मदद करता है। बच्चों युवाओं और बुजुर्गों सभी के लिए दूध उपयोगी साबित होता है, पोषण और स्वास्थ्य को लेकर जागरूक नागरिकों के लिए दूध और डेयरी उत्पाद बेहद आवश्यक है। पशु चिकित्सा न केवल जानवरों के इलाज तक सीमित है, बल्कि यह खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और मानव स्वास्थ्य से भी जुड़ा हुआ है। पशु वैज्ञानिक विभिन्न बीमारियों की रोकथाम, निदान और उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दिन उन पशु चिकित्सकों के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर है जो न केवल मूक पशुओं की जान बचाते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य और वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पशु चिकित्सक यह सुनिश्चित करते हैं कि पशु उत्पाद सुरक्षित, पौष्टिक और स्वास्थ्यप्रद हों। इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्थान के बारे में बताया कि यह संस्थान 1959 में स्थापित किया गया था और यह उत्तर-पश्चिम आर्द्र हिमालयी क्षेत्र में पशुपालन अनुसंधान पर कार्य करता है। उन्होंने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा तैयार की गई विभिन्न वैक्सीन एवं अन्य टीकों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। संस्थान स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके पशु आहार प्रणाली विकसित करने और पशु स्वास्थ्य समस्याओं पर शोध करने पर केंद्रित है।

डॉ. देवी गोपीनाथ, वैज्ञानिक द्वारा किसानों को एंटी माइक्रोबॉयल रेसिस्टेंट (AMR) के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि पशु चिकित्सक केवल 'जानवरों के डॉक्टर' नहीं हैं, वे समाज के स्वास्थ्य रक्षक और आर्थिक स्थिरता के आधार स्तंभ हैं। इस अवसर पर बहुत से किसानों ने थनैला रोग के बारे में बताया जिसके लिए उन्होंने मौके पर पशुपालकों को दवाओं के सही उपयोग और स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में विस्तार से समझाया। किसान गोष्ठी में 35 लाभार्थियों को खनिज मिश्रण आवंटित किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन करने के लिए श्री आर रणजीत सिंह तकनीकी अधिकारी की विशेष भूमिका रही।